लक्ष्मी नारायण दुबे महाविद्यालय,

मोतिहारी, पूर्वी चम्पारण

हिन्दी साहित्य इतिहास की लेखन परम्परा

डॉ. सन्तोष विश्नोई, सहायक प्रोफेसर,

हिन्दी विभाग

* साहित्य लेखन प्रयास :-

(i) हिन्दी साहित्य के इतिहास लेखन की शुरुआत फ्रेंच विद्वान 'गार्सा - द-तासी' ने की। इनके द्वारा रचित "इस्त्वार द ला लितरेत्यूर ऐंदुई ऐ ऐन्दुस्तानी" नामक ग्रंथ से हुई है।

जिसका प्रकाशन दो भागों में किया गया है इनमें प्रथम भाग का प्रकाशन सन् 1839 ई० में और द्वितीय भाग का प्रकाशन सन् 1847 ई० में हुआ जिसमें 72 कवियों का जिक्र है।

(ii) हिन्दी साहित्य के इतिहास लेखन की परंपरा में दूसरी महत्वपूर्ण कृति शिव सिंह सेंगर द्वारा 1883 ई० में रचित 'शिवसिंह सरोज' है। इतिहास लेखन के लिए जिस पर्यवेक्षण, तटस्थता और वर्गीकरण की क्षमता की अपेक्षा की जाती है उसका नितांत अभाव इस ग्रंथ में दिखाई देता है।

(iii) सर जॉर्ज ग्रियर्सन :- ग्रियर्सन द्वारा रचित 'द मॉडर्न वर्नेक्यूलर लिटरेचर ऑफ हिन्दुस्तान' नामक ग्रंथ का प्रकाशन सन् 1888 ई० में एशियाटिक सोसायटी ऑफ बंगाल की पत्रिका के विशेषांक के रूप में करवाया गया।

→ कुछ विद्वानों ने तो इनके इतिहास ग्रंथ को हिन्दी साहित्य का प्रथम इतिहास ग्रंथ माना है।

→ जार्ज ग्रियर्सन जिन्होंने 700 ई० से हिन्दी साहित्य का प्रारंभ माना है।

→ इसके अनुसार प्रथम काल को चारण काल (700-1300) माना गया है।

* डॉ० ~~स~~ रामकुमार वर्मा के अनुसार – प्रथम काल संवत (700-1000) संधि काल।
* संवत 1000 ई० -1375 तक का चारण काल। स्वयंभू को
* अपभ्रंश काल के लेखक को हिन्दी साहित्य का प्रथम कवि माना है।
* आचार्य रामचंद्र शुक्ल के अनुसार – देवसेन हिन्दी साहित्य के प्रथम कवि है।
* राहुल सांस्कृत्यायन ने – सरहप्पा (769 ई० के आस पास) को हिन्दी साहित्य का प्रथम कवि माना है।

बौद्ध साहित्य

- सिद्ध (84) सरहप्पा प्रथम
  - सहजयान / महायान
  - हीनयान
- नाथ (9) गोरखनाथ

* पाण्डुलिपि – लिखित मूल रचना
* अंतिम सम्राट हर्षवर्द्धन के पश्चात केन्द्रीय सत्ता का विखंडन प्रारंभ हो गया।
* सिद्ध साहित्य की संख्या 84 है। जिसमें कुछ नाम निम्नलिखित हैं। सरहप्पा, शबरप्पा, लुईप्पा, कन्हप्पा, डोम्भिप्पा।
* सिद्ध कवियों का प्रमुख क्षेत्र पूर्वांचल रहा है।

* साहित्य – साहित्य उस रचना को कहेंगे जिसमें सच्चाई प्रकट की गई हो, जिसकी भाषा प्रौढ परिमार्जित सुन्दर और जिसमें दिल और दिमाग पर असर डालने का गुण हो।

* जबकि प्रत्येक देश का साहित्य वहाँ कि जनता के चित्रवृति का संचित प्रतिबिंब है। तब यह निश्चित है, कि जनता की चित्रवृति के परिवर्तन के साथ - साथ साहित्य के स्वरूप में परिवर्तन होता जाता है, आदि से अंत तक चित्रवृतियों को परखते हुए साहित्य के परंपरा के साथ उनका सामांजस्य दिखाना साहित्य का इतिहास कहलाता है।

* हजारी प्रसाद द्विवेदी :- साहित्यिक पुस्तकें हमें सुख - दुख की व्यक्तिगत संकीर्णताओं और दुनियाओं के झगड़ों से ऊपर ले जाता है। और संपूर्ण मनुष्य जाति को और भी आगे प्राणिमात्र के दुख - शोक, राग - विराग, ~~अह~~ अहलाद - आमोद को समझने की दृष्टि में सहानुभूति होती है।

* महावीर प्रसाद द्विवेदी :- ज्ञान राशि के संचित कोश का नाम साहित्य है।

* प्रेमचंद :- साहित्य की सर्वोत्तम परिभाषा जीवन की आलोचना है। चाहे वह निबंध के रूप में हो चाहे कहानियों के या काव्य के उसे हमारे जीवन के आलोचना या व्याख्या करनी चाहिए। साहित्य उसी रचना को कहेंगे जिसमें कोई सच्चाई प्रकट की गई हो जिसकी भाषा प्रौढ़, परिमार्जित, सुन्दर हो और जिसमें दिल और दिमाग पर असर डालने का गुण हो।